451वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 38 | अष्टम् अंक | मार्च 2016

इस अंक में...

12 कार्यशीलता सफलता की बुनियादी कुंजी
14 राष्ट्रीय घटनाक्रम
22 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
28 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
35 नवीनतम सामान्य ज्ञान
44 खेलकूद
49 रोजगार समाचार
51 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
53 आई.ए.एस. सक्सेस प्लानर—यह समय है सिविल सेवा परीक्षा के लिए जुनूनी होने का
56 सिविल सेवा साक्षात्कार 2016 हेतु विशेष—एक सफल आईएएस के अनुभव एवं परामर्श
60 युवा प्रतिभाएं
64 स्मरणीय तथ्य
66 विश्व परिदृश्य
73 फोकस—स्टार्ट अप इण्डिया : नवीन अर्थव्यवस्था के मुख्य साझीदार
78 आओ विज्ञान करके सीखें—एन.सी.ई.आर.टी. पुस्तकों का सारांश एक नए प्रारूप में (कक्षा 6 से लेकर 12 तक)
83 आर्थिक लेख—भारत का बीमा उद्योग
86 समसामयिक लेख—भारत-नेपाल रिश्तों में पनपता अविश्वास
89 पर्यावरण लेख—पर्यावरण परिवर्तन एवं वैश्विक तापन के फलितार्थ
96 द्विपक्षीय रिश्ते—जापान के प्रधानमंत्री शिंजो अबे की भारत यात्रा
98 सामयिक लेख—म्यांमार में लोकतंत्र की आहट एवं भारत
100 सुदूर संवेदन—गगन : भारत की नवनिर्मित दिशा सूचक प्रणाली
101 छत्तीसगढ़ विशेष—छत्तीसगढ़ की प्रमुख सामाजिक-आर्थिक योजनाएं एवं कार्यक्रम
103 साहित्यिक लेख—हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में चलचित्रों का योगदान
104 स्वच्छ भारत लेख—स्वच्छता अभियान-एक सर्वेक्षण
106 बैंकिंग आलेख—बढ़ता एन.पी.ए. : कारण एवं निवारण
109 स्वास्थ्य सेवाएं—ग्लोबल कॉल टू एक्शन शिखर सम्मेलन 2015
113 संदर्भ मानव विकास सूचकांक 2015 की रिपोर्ट-मानव विकास के आइने में भारत
115 सार संग्रह
119 वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान—(i) आर.ए.एस./आर.टी.एस. (प्रा.) परीक्षा, 2013
131 (ii) यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2015
136 (iii) नेशनल इंश्योरेंस कम्पनी लि. प्रशासनिक अधिकारी परीक्षा, 2015
138 (iv) उत्तर प्रदेश राजस्व निरीक्षक परीक्षा, 2014
144 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
146 ऐच्छिक विषय—(i) इतिहास—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2015
153 (ii) शिक्षा—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2015
157 वार्षिक रिपोर्ट 2014-15—उर्वरक क्षेत्र में अनुसंधान, विकास एवं प्रसार गतिविधियों की वर्तमान स्थिति तथा भावी रणनीतियाँ : एक दृष्टि में
161 तर्कशक्ति—नाबार्ड सहायक प्रबन्धक (ग्रेड ए और बी) परीक्षा, 2015
166 संख्यात्मक अभियोग्यता—आईबीपीएस बैंक पी.ओ. (प्रा.) परीक्षा, 2015
171 क्या आप जानते हैं ?
172 अपना ज्ञान बढ़ाइए
174 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा—"आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने कोचिंग को एक उद्योग बना दिया है"
176 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—जाति आधारित जनगणना के राजनीतिक निहितार्थ
179 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक—440 का परिणाम
180 English Language—IBPS Mains (PO/MT) Exam., 2015

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. -सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

कार्यशीलता सफलता की बुनियादी कुंजी

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

"आप जो कुछ चाहते हैं, वह आपको मिल जाएगा, यदि आप यह विचार त्यागने के लिए तैयार हैं कि आप उसे प्राप्त नहीं कर सकते."

– रॉबर्ट एन्थनी

सफल होने के सैकड़ों उपाय हर रोज पढ़ने व सुनने को मिलते रहते हैं. शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति मिले जो ये न जानता हो कि सफलता के लिए हमें क्या करना चाहिए ? हमें विनम्र होना चाहिए, लगन-सचेतता, धैर्य-आत्मविश्वास से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहिए. असफल-ताओं से घबराना नहीं चाहिए. ये सब बातें बहुत आम हो गई हैं. आज सवाल यह नहीं बचा कि हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं ? सम्भवतया हर कोई इस तथ्य को जानता और समझता है, किन्तु जीवन में उतार नहीं पाता. इसका कारण क्या है ? इसका कारण है हम जिन चीजों से सफल होना चाहते हैं, उनको अपनाने में सतत् कार्यशील होना सफलता की पहली शर्त है, उद्यमी होना होता है. आज हर के पास बहुत अच्छे-अच्छे विचार हैं, परन्तु उनको क्रियान्वित करना हर किसी के वश की बात नहीं, क्योंकि प्रायः लोगों के दिमाग में कुछ बाधाएं होती हैं जिन्हें वे पार नहीं कर पाते. आइए जानें, ऐसे कुछ बाधाओं के बारे में ...

1. कुछ अच्छा नहीं हुआ, तो .....
2. किसी को बुरा लग गया, तो .....
3. क्या मैं इसे कर पाऊँगा ?
4. आज तक किसी ने ऐसा किया क्यों नहीं ?
5. लोग क्या कहेंगे ?
6. अगर मेहनत सफल नहीं हुई, तो ...
7. जमाना बहुत खराब है, कोई किसी को कुछ नहीं देता.
8. मैं बहुत Unlucky हूँ.
9. मेरे अकेले के करने से हो भी क्या जाएगा ?
10. मैं ही क्यों करूँ ? अपनी नींद खराब क्यों करूँ ?
11. आज दिन तक इतना किया मैंने, मुझे मिला क्या ?

उपर्युक्त बातें व विचार अनेक बार हम सबके भीतर घूमते रहते हैं. ये ही वे बाधाएं हैं जिनके कारण हम अनुद्यमी बने रहते हैं. अपनी शक्तियों का सही उपयोग नहीं कर पाते.

समण भगवान महावीर व समण गौतम बुद्ध अपने शिष्यों को कहा करते कि–

'णो णिण्हवेज्ज वीरियं.'

अर्थात् अपनी शक्तियों को छिपाओ मत. आपमें आत्मबल है, उसे जगाओ. उपयोग में लाओ. कार्यशील बनो. बिना लगन के, बिना कार्यशीलता के आज दिन तक इस विश्व में कुछ भी सृजित नहीं हो पाया है. एक भ्रमर भी अपनी कार्यशीलता के कारण फूलों पर मँडराता रहता है, पराग कणों को संसारित करता है, मधु बना पाता है. एक चींटी भी चलते-चलते पहाड़ों को लाँघ जाती है. पानी की सतत् बहती धारा चट्टानों को भी तोड़ देती है. यह श्रमिकों की कार्यशीलता ही है, जो इतनी ऊँची व भव्य इमारतें खड़ी कर देती हैं. यदि एक विद्यार्थी हर क्षण प्रत्येक कण से कुछ न कुछ सीखता जाए, तो वह एक दिन महान् विद्वान्, शिक्षक या वैज्ञानिक बन सकता है.

●●●